Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 1-7

डा0 धर्मवीर भारती के निबन्ध साहित्य में जीवन मूल्य

डा0 अर्चना देवी अहलावत, प्रवक्ता हिन्दी विभाग,
(पी.जी., स्ववित्तपोषित योजना में नियुक्त)
दयानन्द आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद (उ.प्र.) भारत

हिन्दी प्रयोगवादी कविता का एक सशक्त स्तम्भ, पदमश्री उपाधि प्राप्त, 1951 में प्रकाशित तारसप्तक के प्रमुख कवि धर्मवीर भारती प्रेम और सौन्दर्य के कुशल शिल्पी हैं। उन्होनें पत्रकार, लेखक, सम्पादक, प्रध्यापक आदि रुपों में हिन्दी भाषा, साहित्य और समाज की सेवा की है।

जीवन परिचय–

डा. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 में इलाहाबाद में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धर्मवीर वर्मा है लेकिन राष्ट्रवाद की अवधारणा से प्रभावित होकर भारतीय लिखना शुरु कर दिया, जो अंततः "भारती" बन गया। भारती छोटे थे तभी पिताजी का निधन हो गया था। मॉ आर्य समाजी थी और व्यावहारिक व लोकप्रिय भी थी। भारती की पढाई बड़ी कठिनाइयों में हुई। बी0ए0 हिन्दी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर 'चिन्तामणि घोष' पदक प्राप्त हुआ था। एम0ए0 हिन्दी में प्रवेश लेने के लिए उन्हें 'मुर्दो का गॉव' की पांडुलिपि मात्र दो सौ रुपये की रायल्टी पर देनी पड़ी थी। ये पत्र–पत्रिकाओं में उन्हीं दिनों लिखने लगे थे। जब एम0ए0 उत्तरार्द्ध में थे, तभी 'संगम' नामक पत्रिका में उपसम्पादक बन गये थे। उन्हीं दिनों 'परिमल' नामक पत्रिका की स्थापना की थी। 1947 में एम0ए0 किया और फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 की, और प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रध्यापक हो गये।

सन् 1960 में हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका 'धर्मयुग' में सम्पादक होने पर रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था "इतने बड़े पत्र के लिए इतने ही बड़े साहित्यकार की बलि देनी जरुरी थी।"

इनके पारिवारिक जीवन में परित्यक्ता पत्नी शान्ती भारती प्रयाग में रहती है। दूसरी पत्नी पुष्पा भारती स्वंय लेखिका हैं। अब भारती जी पुत्र–पुत्री आदि के भरे पूरे परिवार वालें हैं। सन् 1967 में संगीत नाटक अकादमी के सदस्य मनोनीत हुए। 1972 में "पदमश्री" और 1990 में "भारत–भारती" पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं।

डा. धर्मवीर भारती का कृतित्व परिचय–डा. धर्मवीर भारती मूलतः कवि हैं। **'दूसरा सप्तक'** की भूमिका में "असल में भारती का मन कविता में ही रमता है क्योंकि कविता के माध्यम से ही भारती आज की पिसती हुई संघर्षपूर्ण कटु और कीचड़ में बिलबिलाती हुई जिन्दगी के भी सुन्दरतम अर्थ खोज पाने में समर्थ रहा है। कविता ने उसे अत्यधिक पीड़ा के क्षणों में विश्वास की आवाज रही है"। कविता के साथ ही भारती जी ने निबन्ध, आलोचना, उपन्यास, कहानी, रिपोर्ताज आदि अन्य विधाओं में भी लिखा है। धर्मवीर भारती ने पॉच काव्य संग्रह, छः कहानी संग्रह, दो उपन्यास, आलोचना संग्रह, तीन एकांकी संग्रह, काव्य नाटक, अनुवाद, और तीन निबन्ध संग्रह लिखें हैं।

इसके अलावा उन्होंने रिपोर्ताज "धर्म क्षेत्रे" के नाम से, यात्रा साहित्य "चीन जैसा देखा" प्रकाशित हुए हैं। 1986 तक धर्म युग के सम्पादक रहें और स्वतन्त्र रुप से पत्र–पत्रिकाओं में लेखन करके साहित्य सेवा करते रहे। 04 सितम्बर 1997 में नश्वर संसार कों छोड़कर विदा हो गये।

निबन्ध संग्रह है

पश्यन्ती' में कुल 17 निबन्ध संकलित है। कहानी अनकहनी में 45 निबन्ध संग्रहीत हैं। ठेले पर हिमालयः इस संग्रह के निबंधों का विभाजन यात्रा–विवरण, डायरी, पत्र, शब्दचित्र, साहित्यिक डायरी, संस्मरण कैरीकेचर, व्यंग्य, रूपक, श्रद्धांजलि, आत्मव्यंग्य आदि उपशीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है। यह उनके भावुक गद्य–लेखक की प्रतीति कराता है। इस प्रकार प्रत्येक रचना का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, पौराणिक, साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक आदि मूल्यों की दृष्टि से अपना–अपना महत्व रखते हैं। इनमें भारती की भावुकता, स्वच्छन्दवादी चेतना, वैयक्तिकता और सामाजिकता तथा सहजता के साथ ही दायित्व निर्वाह, बौद्धिक चिन्तन की क्षमता और मूल्य दृष्टि को देखा जा

सकता है। डा0 धर्मवीर भारती के निबन्धों मूल्य चेतना सम्बन्धी विवरण इस प्रकार हैंः–

''मूल्य शब्द संस्कृत की मूल धातु में 'यत्' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी आदि होता है।''[1]

वस्तुतः ''मूल्य शब्द अंग्रेजी भाषा के (Value) शब्द का पर्याय है। लैटिन भाषा (Valere) शब्द से (Value) शब्द का निर्माण हुआ है। (Valere) का अर्थ है– सुन्दर या उत्तम। जो कुछ उत्तम है और इच्छित है वही (Value) या मूल्य है।''[2]

हिन्दी विश्वकोश, खण्ड–9 में ''मूल्यों को भावात्मक–अभावात्मक और तटस्थ रूप में स्वीकारा गया है।''[3]

''मूल्य वस्तुतः सामाजिक हैं जिसकी आधारशिला अर्थशास्त्र एवं राजनीति की प्रक्रिया मे सुप्त है।''[4]

डॉ0 नगेन्द्र मूल्य का तात्पर्य समझाते हुए लिखते हैं– ''मनुष्य के कर्म अथवा भोग के फलितार्थ रूप में जिसका महत्व या मान होता है। सामान्यतः उसे ही मूल्य कहते हैं। [5]

जब समाज में चारों तरफ दैन्य, पराजय, निराशा, कुण्ठा, कुरूपता, पाशविकता आदि इस कदर व्याप्त हो जाती है उसमें मनुष्यता के लिए तिल भर भी जगह नहीं बचती। उस समय मनुष्यत्व की रक्षा जाँच परखकर करनी चाहिये, जिससे उसका ही नहीं बल्कि सारे समाज का विकास हो सके। स्वयं भारती जी ने 'कहानी–अनकहनी' की संक्षिप्त भूमिका में लिखा है ''समकालीन इतिहास–चक्र की कोई छोटी से छोटी घटना हो, सामान्य से सामान्य समाचार हो– लेकिन मानव मूल्यों के निष्कर्ष पर उसे भी कसा जा सकता है और बहुत कुछ हैं जो उसके संदर्भ में कहा जा सकता है, बहुत कुछ जिसका स्थायी मूल्य है। यह लेखन उसी दिशा में एक प्रयोग रहा है।''[6]

इस संसार में विधाता ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाया है। यहां पर वही एक ऐसा प्राणी है जो अच्छे और बुरे की पहचान कर सकता है तथा मानव मूल्यों की स्थापना कर सकता है। इसलिये उसमें मनुष्यता का होना आवश्यक है क्योंकि मनुष्यता के कारण ही मनुष्य एक सामाजिक प्राणी कहलाने का अधिकारी होता है तभी तो– ''परम्परा, समाज–व्यवस्था, राजसत्ता, धर्म, नियम, आचार, नैतिकता कठोरतम वर्जनाओं को निर्ममता से जाँच कर स्वीकार या अस्वीकार की एकमात्र कसौटी होती है। संकट के समक्ष अपने मनुष्यत्व की रक्षा और उसकी प्रतिष्ठा करता हुआ मनुष्य। [7]

यही मनुष्य मानव मूल्यों की स्थापना कर प्रगति करता है। ''वस्तुतः कल्मष भी मनुष्य का अपना सत्य है, उसे स्वीकार करके ही वह सार्थक हो सकता है। दबाने से वह मनुष्य को नष्ट कर देता है। समस्त गुण और अवगुण जब तक निर्विकार चित्त से नारायण को नहीं सौंप दिये जाते तब तक वे भार मात्र हैं। [8]

''वह एक कहानी और उसके अनेक परिशिष्ट'' व्यक्ति और कृतित्व का निबन्ध है। जिसमें भारतीय जी ने मोपासा की विख्यात कहानी 'धागे का टुकड़ा' में किसान अपने प्रति किये गये अन्याय के खिलाफ निरन्तर संघर्ष करता हुआ टूट जाता है पर समाज द्वारा लगाये गये अन्याय से उसने समझौता नहीं किया है। इसमें भारती जी ने व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संघर्ष के बीच मानव मूल्यों का अनुपालन करने वाले किसान की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लिखा है– ''जो भले हैं, ईमानदार हैं, जिन्होंने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है लेकिन जो हर तरफ से लांछित, प्रताड़ित और अपमानित हैं उनके साथ यह अन्याय क्यों हो रहा है ? चारों तरफ से तरह–तरह के अनुभव मन में बार–बार एक सवाल उठा जाते थे– कैसी है यह जिन्दगी जिसमें जो जितना सच्चा, सरल और सीधा है वह बार–बार, हर तरह से प्रताड़ित होता है।''[9]

'धागे का टुकड़ा' कहानी एक बेहद सीधे–साधे ईमानदार किसान की है। यह किसान बाजार जा रहा था तो रास्ते में धागे का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया, तो उसने सोचा कि इसे उठा लें, कभी काम ही आयेगा। यह सोचकर वह धागा उठा लेता है और लपेटने लगता है, तो उसका पुराना दुश्मन उसे देख लेता है तो उसके मन में विचार आता है कि यह सोचेगा कि कितना कंजूस है कि धागे का टुकड़ा बटोरता फिरता है। उसने तुरन्त धागा छिपा लिया और कुछ दूर तक सड़क की ओर जाते हुए ऐसा देखता चला गया कि जैसे– उसका कुछ खो गया हो। इत्तफाक से उसी दिन हाडल ब्रेक साहब का चमड़े का बटुआ जेब से गिर गया था, तो सभी जगह मुनादी हो रही थी कि जिसने बटुआ पाया हो वह बटुआ मेयर साहब को दे आये। थोड़ी देर बाद किसान को मेयर साहब के सामने इसलिये बुलाया गया कि तुमने बटुआ उठाया है और बटुआ उठाते हुए देखा गया है। मालूम हुआ कि उसके पुराने दुश्मन ने आकर चुगली की है। जब किसान से पूछतांछ हुई तो उसने कहा हमने बटुआ नहीं उठाया है। मैंने धागे का टुकड़ा उठाया था। लेकिन कोई भी यहां तक कि उसके आत्मीय और पारस्परिक सम्बन्धों के निकट सभी लोगों

ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया और उसका मानसिक तनाव बढ़ता गया और वह अन्दर से टूट गया था। दूसरे दिन वही बटुआ एक खेतिहर मजदूर ने लाकर मेयर साहब को दिया वह बटुआ उसे पगडण्डी पर मिला था। किसी ने बटुआ मिलने की खबर किसान को आकर दी तो जैसे उसमें नयी जिन्दगी लौट आयी। उसने सोचा आखिरकार सत्य विजयी हुआ और झूठ हार गया। वह घर–घर जाकर सबको यह बता आया कि बटुआ कैसे मिला। बाजार गया वहां बताया लेकिन कोई अब भी उसकी बात का विश्वास नहीं करता कि बटुआ उसने नहीं चुराया था और सब यही सोचते किसान बहुत चालाक है पैसे देकर इसने बटुआ लौटाया है। अन्त में उसकी दिमाग की नसें फट गयीं और वह मर गया पर किसी ने भी सत्य को स्वीकार नहीं किया। इसीलिए भारती जी आक्रोश में आकर कहते हैं–''आखिर वह कौन सी व्यवस्था होगी, कैसी होगी, जिसमें उस किसान की सच्चाई को सच्चाई की तरह कबूल किया जायेगा, उसमें उसके ईद–गिर्द रहने वाले तमाम दूसरे इन्सानों में एक सही और बुनियादी समझ पैदा होगी। व्यक्ति और समाज, सत्य और असत्य। अकेलापन समाज के अभिन्न अंग होने की सार्थकता और फिर अन्ततोगत्वा यह कि सत्य, अपने निजी जीवन में उपलब्ध किया हुआ सत्य कैसे सबका बन सकेगा ? और अगर नहीं बन पाता है तो हम क्या करें ? हमें क्या करना चाहिए।''[10]

''तलाश ईश्वर कीः बजरिये अफीम '' और अराजनीति की राजनीति'' पश्यन्ती के अन्तिम दो निबन्ध हैं जिनमें आधुनिकता के नाम पर पूँजीवादी देशों में पनपती मूल्यहीनता का वर्णन है। विकासोन्मुख व्यवस्थाः ह्रासोन्मुख आत्मीयता, ये ठग हटें तो मुसाफिर को रास्ता मिला जाये, 'कावा और दरवेश के पाँव' आदि निबन्धों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार किया गया है।

भारती जी राष्ट्र निर्माण के लिए इन्सानी रिश्तों वाली आत्मीयता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हैं तभी उन्होंने लिखा है। ''हमारी संस्कृति की जो महत्वपूर्ण उपलब्धियां थीं जैसे वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय के बावजूद गॉव, मुहल्ला, पास–पड़ासे की मानवीय आत्मीयता, अपनापन, इन्सायिनत के स्तर पर बड़े–छोटे का भेद–भाव न कर एक पारिवारिकता की मधुरता–उन्हें अगर हमने नष्ट हो जाने दिया तो फिर वह कभी–कभी पूरी न हो सकेगी। धन की दरिद्रता को कभी अमेरिका, कभी सोवियंत रूप से धन या मशीन मांगकर दूर की जा सकती है, पर वह आदमीयत जो हमारी हजारो वर्ष की परम्परा की देन हैं, उसे हम फिर किसी दूसरे से उधार नहीं मॉग सकेंगे।''[11]

डॉ भारती मानव मूल्यों को धर्म एवं सम्प्रदायों से ऊपर मानते हुए लिखते हैं– यहां ''अगर हमारा धर्म हमें यह सिखाता है कि इन्सानियत और हमदर्दी और भाईचारा सब अपने ही कर्मवालों के लिए हैं, उस दायरे से बाहर जितने लोग हैं सभी गैर हैं और उन्हें जिन्दा रहने का कोई हक़ नहीं तो मैं उस धर्म से अलग होकर विधर्मी होना ज्यादा पसन्द करूॅगा।''[12]

कहनी अनकहनी में 11 जून, 1961 को लिखे गये एक छोटे से निबन्ध 'एक छोटी खबर एक बड़ा सन्दर्भ' में प्रेम, हमदर्दी, मानवता, स्वाभिमान, ममता और विश्वास आदि जीवन मूल्यों को स्थापित करते हुए डॉ0 भारती लिखते हैं– सिर्फ हमदर्दी के दो बोल, प्यार की एक थपकी, इन्सानी, जज्बात की समझ, और कष्ट की लहरों से जूझते हुए एक बच्चे को जरा–सा–स्नेह–भरा–सहारा और लो, उसकी दुनियां में और उसके जैसे तमाम लोगों की दुनियां में एक रोशनी फूट पड़ी।'' [13]

इसी की पुष्टि करते हुए आगे लिखा है कि–''नेकी, ममता, आत्म–त्याग, प्यार, एक दूसरे के लिये कुछ न कुछ करने की मानवीय भावनाएं कितनी प्रमुख है। जब हम दुःख और निराशा में होते हैं, चारों तरफ अंधेरा होता है, तो पता नहीं किस अपरिचित की एक हमदर्द मुस्कान, एक प्रोत्साहन भरा, प्यारा– सा वाक्य हमें मौत के दरवाजे से खींचकर फिर प्रकाश–भरे, उत्साह भरे, आशा– भरे, जीवन–पथ पर लाकर खड़ा कर देता है और मानवीयता से भरी, उस नितान्त साधारण सामान्य व्यक्ति की वह ईमानदार हमदर्दी ऐसी बड़ी मगर खामोश क्रान्ति हमारे जीवन में कर जाती है।''[14]

वर्तमान समय में नेकी, ममता, आत्मत्याग, प्यार, ईमानदारी, हमदर्दी, सहानुभूति, आदि मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मनुष्य की जिन्दगी यंत्रचालित के समान इतनी व्यस्त है कि वह दूसरों के बारे में सोच ही नहीं सकता है। पहले यंत्रों, मुहल्ले में जो इन्सानियत और मानवीयता के सूत्र थे। वे धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं आज आवश्यकता है कि हर व्यक्ति अपनी बंजर मनोभूमि को उर्वर बनाये। जिससे वह अपने व्यक्तित्व और देश का विकास कर सके। इस प्रकार हम देखते हैं, कि भारती जी ने अपने निबन्धों में राष्ट्र–भाषा, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय आदि अनेकानेक मूल्यों को स्थापित किया है। 'धर्मवीर भारती चिंतन और अभिव्यक्ति' पुस्तक में डॉ0 हरिवंश पाण्डेय

ने 'कहानी अनकहनी' निबन्धों को संक्षेप में इस प्रकार लिखा है– ''कहानी–अनकहनी की रचनायें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों से सम्बन्धित लेखक की समाचार पत्रीय टिप्पणियां हैं जो संजीव संप्रेषण के कारण वैयक्तिक निबंधों जैसी लगती हैं और बोध के धरातल पर लेखक के अनुभव को व्यापक संदर्भों से जोड़ती भी हैं। सांस्कृतिक आयोजन, समाचार पत्रों की दुर्दशा, संवाद समितियां, अंग्रेजी के विषय में प्रचलित भ्रान्तियां और दावे, विश्वविद्यालयों की राजनीति, हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय लेखक परिगोष्ठियां पुरस्कार और अभिनन्दन समरोह, उर्दू भाषा और लिपि, योजना के मसौदे, साम्प्रदायिकता, भारत के अंग्रेजी लेखक, फिल्म वैज्ञानिक शब्दावली, निर्माण, रंगभेद, राष्ट्रीय लिपि एशिया और पूर्व पश्चिम का भेद जैसे सामान्य जागृति रूचि के प्रचलित मामलों पर अपने पाठकों की जानकारी बढ़ाने या उन्हें शिक्षित करने के लिहाज से इन टिप्पणियां का काफी महत्व है। इन रचनाओं में साम्प्रदायिकता की तीखी पकड़ और नये मूल्यों के अन्वेषण की छटपटाहट भी दिखाई देती है। लेखक हर रचना को एक मुतूहलवर्धक उठान देकर फिर मुख्य विषय पर एक गहन प्रश्नशीलता जगाकर अन्त में प्रायः मूल्यों की सम्भावना की खोज करता है।''[15]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारती का निबन्ध साहित्य भी उनके नाटक, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं की भांति मूल्य बोध से अनुप्राणित है। भारती जी के निबंधों में स्वच्छन्दतावादी चेतना, वैयक्तिकता और सामाजिकता का निर्वाह सहज रूप में हुआ है। इनके निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में विवेकपूर्ण दायित्व का निर्वाह हुआ है। इनके निबन्धों में प्रेम, हमदर्दी ममता, आत्म त्याग, सत्य, विश्वास, नेकी, सहानुभूति, इन्सासिनयत, स्वाभिमान और मानवीयता आदि मानव मूल्यों की स्थापना हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संस्कृत हिन्दीकोश– वामन शिवराम आरटे पृ0– 812
2. हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, डॉ0 रमेश चन्द्र लवानिया, पृ0– 1
3. हिन्दी विश्वकोश, खण्ड–9, सं0 ह्रदय नारायण मिश्र
4. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, पृ0– 659
5. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका– डॉ0 नगेन्द्र, पृ0–158
6. कहनी–अनकहनी (भूमिका में)– धर्मवीर भारती
7. पश्यन्ती – धर्मवीर भारती पृ0–17
8. पश्यन्ती– धर्मवीर भारती पृ0–20
9. पश्यन्ती – धर्मवीर भारती पृ0–40
10. पश्यन्ती– धर्मवीर भारती पृ0–42
11. पश्यन्ती – धर्मवीर भारती पृ0–41
12. कहनी–अनकहनी धर्मवीर भारती पृ0–28
13. कहनी–अनकहनी धर्मवीर भारती पृ0–97
14. कहनी–अनकहनी धर्मवीर भारती पृ0–78
15. कहनी–अनकहनी धर्मवीर भारती पृ0–79–80
16. धर्मवीर भारती, चिन्तन और अभिव्यक्ति– डॉ0 हरिवंश पाण्डेय पृ0–297